नमाज़ की शर्तें, स्तंभ तथा आवश्यक कार्य

लेखक

प्रकांड इस्लामी विद्वान तथा सुधारक

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब (रहिमहुल्लाह)

1115-1206 हिजरी

शोधकर्ता, संशोधक एवं इस किताब की हदीसों के संदर्भयुक्त-कर्ता

अल्लाह की दया के मुहताज

डॉक्टर सईद बिन वह्फ़ अल- क़हतानी

नमाज़ की शर्तें, स्तंभ तथा आवश्यक कार्य

लेखक : प्रकांड इस्लामी विद्वान तथा सुधारक इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल बह्हाब (उनपर अल्लाह की दया हो)

1115-1206 हिजरी

शोधकर्ता, संशोधक एवं इस किताब की हदीसों के संदर्भयुक्त-कर्ता:

अल्लाह की दया के मुहताज डॉक्टर सईद बिन वह्फ़ अल- क़हतानी

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع

الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900

ceo@rabwah.sa

P.O.BOX: 29465

RIYADH: 11557

www.islamhouse.com

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा दयालु. बेहद कृपालु है।

शोधकर्ता की प्रस्तावना

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है। हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता माँगते हैं और उसी से क्षमायाचना करते हैं। हम अपनी आत्मा और अपने कर्मों की बुराइयों से अल्लाह की शरण माँगते हैं। वह जिसे हिदायत दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और वह जिसे गुमराह करे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं बन सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। उनपर, उनके परिवारजनों पर और उनके सहाबियों पर, अल्लाह की अनगिनत रहमत एवं शांति अवतरित हो। तत्पश्चात:

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब की " شروط الصلاة، وأركانها، وواجباتها" नामी यह किताब, अत्यंत लाभकारी है, विशेषतया प्रारंभिक पाठकों और जनसामान्य के लिए, बल्कि

अल्लाह तआला ने इसके द्वारा विशेष और सामान्य, सबको उसी प्रकार लाभ पहुँचाया है, जिस प्रकार उनकी अन्य सभी किताबों के द्वारा, दुनिया के कोने-कोने में बसने वालों को पहुँचाया है। यह निश्चय ही, उनपर और अन्य सभी लोगों पर अल्लाह का विशाल उपकार है।

इस पावन पुस्तक की व्याख्या हमारे गुरू इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ -रहिमहुल्लाह- ने अपने घर के पास की मस्जिद में की थी। उनके सामने इस पुस्तक को शैख़ मुहम्मद इलयास अब्दुल क़ादिर ने तक़रीबन 1410 हिजरी में पाठ किया था और इमाम इब्ने बाज़ ने पाँच दिनों में, इशा की अज़ान और इक़ामत की मध्यावधि में पाँच बैठकों में इसकी शानदार, अनुसंधानयुक्त, संक्षिप्त, लाभदायक और बेहद उपयोगी व्याख्या की थी। इन पाँचों पाठों की कुल अवधि, एक कैसेट में, नव्वे मिनट की थी। वह कैसेट मेरे पास लग-भग पच्चीस साल, मुहर्रम 1435 हिजरी तक पड़ी रही। उसके बाद अल्लाह तआला ने मुझे कैसेट की आवाज़ को शब्दों की सूरत में कागज़ पर उतारने का सुयोग प्रदान किया।

इसमें मेरी कार्य-प्रणाली इस प्रकार रही :

1- मैंने शैख़ -रहिमहुल्लाह- की रिकार्डेड ध्वनि के एक-एक शब्द की, बहुत गहराई से अभिलेख और व्याख्या दोनों के साथ तुलना की है, और समस्त प्रशंसा तो बस अल्लाह ही के लिए है।

2- मैंने इस किताब के अभिलेख का तुलनात्मक शोध, चार अलग-अलग संस्करणों की प्रतियों से किया है, जिनका विवरण इस प्रकार है : पाठक की वह प्रति, जिसे देखकर वह शैख़ के सामने पढ़ता था और शैख़ सुनते थे। इसी प्रति को मैंने मूलाधार बनाया है। दो हस्तलिखित प्रतियाँ, जिनमें से पहली प्रति बहुत स्पष्ट और सुंदर लिखाई के साथ, शाह फ़ैसल इस्लामी शोध एवं अध्ययन केंद्र में माइक्रो फ़िल्म क्रमांक 5258 के तहत सुरक्षित है, जिसको इबराहीम बिन मुहम्मद ज़ौयान ने 6/5/1307 हिजरी में लिखा। उसकी असल प्रति क़सीम के जामे उनैज़ा पुस्तकालय में मौजूद है। यह प्रति, शैख़ -रहिमहुल्लाह- की ही निम्नलिखित पुस्तकों की पांडुलिपियों के साथ संकलित है : सलासतुल उसूल (तीन मूल सिद्धांत), अल-क़वाइदुल अरबआ (चार मूल सिद्धांत) और कश्फ़ अश-शुबुहात (संदेहों का निवारण)। दूसरी हस्तलिखित प्रति, शाह फ़ैसल केंद्र ही में माइक्रो

फ़िल्म क्रमांक 5265 के तहत मौजूद है और जिसका असल स्थान भी क़सीम का जामे उनैज़ा पुस्तकालय ही है। यह भी शैख़ -रहिमहुल्लाह- ही की निम्नलिखित पुस्तकों की पांडुलिपियों के साथ संकलित है : सलासतुल उसूल, अल-क़वाइदुल अरबआ, किताबुत तौहीद और आदाबुल मश्यि लिस-सलात। इसी तरह, उनके साथ शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या -रहिमहुल्लाह- की किताब "अल-अक़ीदा अल-वासितिय्या" की पांडुलिपि भी संकलित है। यह प्रति 1338 हिजरी में नकल की गई थी। उसपर नकल करने वाले ने अपना नाम नहीं लिखा है। उसकी लिखावट स्पष्ट और सुंदर है, लेकिन उसमें लेखक के कथन " والدليل قوله تعالى: «ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن ..." से लेखक के कथन, "...عليه وسلم في الوقتين" तक छिद्रित है। मैंने इस प्रति का, दूसरी प्रतियों से तुलनात्मक अध्ययन किया है। चौथी प्रति, इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामी विश्वविद्यालय से प्रकाशित प्रति है, जिसके संशोधन और पांडुलिपि संख्या 86/269 से तुलना का कार्य, शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन ज़ैद रूमी और शैख़ सालेह बिन मुहम्मद अल-हसन ने किया है।

3- प्रतियों या पांडुलिपियों में कहीं-कहीं जो अंतर है, उसे मैंने पादटीका में स्पष्ट कर दिया है।

4- आयतों को मैंने सूरतों के साथ संदर्भित कर दिया है।

5- मैंने तमाम हदीसों और पूर्वजों के कथनों को संदर्भयुक्त कर दिया है।

6- तमाम आयतों, हदीसों और पूर्वजों के कथनों की एक सूची भी बना दी है।

7- मैंने इस भावार्थ का नाम "अश-शरहुल मुमताज़ लिश-शैख़ इमाम इब्ने बाज़" रखा है। जब मैंने इस भावार्थ को पूरा लिख लिया और वह प्रकाशित भी हो गया, तो मैंने चाहा कि "नमाज़ की शर्तें, स्तंभ तथा आवश्यक कार्य" के मूल लेख को एक अलग किताब का रूप दे दूँ और उन तमाम मेहनतों को उसमें समेट दूँ, जो "अश्-शरहुल मुमताज़" की तैयारी में लगी थीं, इस उम्मीद पर कि अल्लाह तआला उससे सबको लाभान्वित करेगा। मैंने ऐसा इसलिए भी किया कि उसको भावार्थ से अलग कर देने से उसको ज़ुबानी याद करना,

विशेषतया प्राथमिक वर्गों के छात्र-छात्राओं आदि के लिए, अधिक आसान होगा और जो "अश्-शरहुल मुमताज़" से लाभ उठाना चाहेगा, वह अलग से उसका अध्ययन करेगा।

मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह मेरे इस कार्य को केवल अपनी ख़ुशी की प्राप्ति के साधनस्वरूप ग्रहण कर ले, और उसे उसके लेखक इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब -रहिमहुल्लाह- और उसके भावार्थ प्रदाता इमाम इब्ने बाज़ -रहिमहुल्लाह- के लिए लाभदायक ज्ञान भंडार बना दे। साथ ही, मुझे इससे मेरे जीवन और मेरी मौत के बाद भी लाभ पहुँचाए और हर उस व्यक्ति को भी इससे लाभ पहुँचाए जो इसे पढ़े। बेशक, अल्लाह तआला ही वह पाक हस्ती है जिससे माँगना सबसे अच्छा है, और उम्मीद की सबसे अच्छी किरण भी वही है, वही हम सबका शरणदाता और कल्याण करने वाला है, इस सर्वशक्तिमान ईश्वर की सहायता के बिना न तो पापों से बचने की शक्ति है, न ही अच्छा करने की शक्ति। अल्लाह तआला, हमारे नबी मुहम्मद पर, उनके परिजनों पर और उनके तमाम सहाबियों पर अपनी बरकत तथा रहमत की बरखा बरसाए!

प्रस्तोता : अबू अब्दुर्रहमान

सईद बिन अली बिन वह्फ़ अल-क़हतानी

यह शब्द दिनांक 25/05/1435 हिजरी, मंगलवार को ज़ुहर की नमाज़ के बाद लिखे गए।

पहली पांडुलिपि का छठा पृष्ठ, जो क्रमांक 5258 के तहत शाह फ़ैसल केंद्र में है। दरअसल यह पांडुलिपि क़सीम के जामे उनैज़ा के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

दूसरी पांडुलिपि का पाँचवाँ पृष्ठ, जो शाह फ़ैसल केंद्र में क्रमांक 5265 के तहत मौजूद है।

यह पांडुलिपि भी क़सीम के जामे उनैज़ा के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

[इस्लाम धर्म के महान ज्ञाता, विद्वानों के विद्वान, इस्लामिक जागरण के ध्वजावाहक इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब -रहिमहुल्लाह- कहते हैं]:

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ), जो बड़ा दयालु एवं बेहद कृपावान है।

नमाज़ की शर्तें नौ (9) हैं :

इसलाम, अक़्ल, तमीज़ (होश संभालने की आयु), हदस (अपवित्रता) को दूर करना, नजासत (गन्दगी) को साफ़ करना, गुप्तांग को छिपाना, समय का आ जाना, क़िबले के सम्मुख होना तथा नीयत करना।

नमाज़ की पहली शर्त : इस्लाम है और इसका विपरीत कुफ़्र है, और काफिर का कोई भी कर्म ग्रहणयोग्य नहीं है, चाहे वह कोई भी कर्म करे। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है : **"मुश्रिकों (बहुदेववाद में विश्वास रखने वालों) का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि वे स्वयं अपने ऊपर कुफ़्र के साक्षी हैं, उनके समग्र कर्म व्यर्थ गए, एवं वे सदैव जहन्नम में**

रहने वाले हैं।" एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फरमान है : **"उनके कर्मों को लेकर, हम धूल के समान उड़ा देंगे।"**

दूसरी शर्त : अक़्ल है जिसका विपरीत पागलपन है। पागल आदमी से उसके स्वस्थ होने तक क़लम उठा लिया जाता है। इसकी दलील यह हदीस है : "तीन प्रकार के लोगों से क़लम उठा ली गई है : सो जाने वाले से, यहाँ तक कि जाग जाए। पागल से, यहाँ तक कि स्वस्थ हो जाए। छोटे बच्चे से, यहाँ तक कि जवान हो जाए।"

तीसरी शर्त : तमीज़ (होश संभालने की आयु) है। इसका विपरीत बाल्यावस्था है, जिसकी सीमा सात साल है। उसके बाद नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया जाएगा, क्योंकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "**तुम लोग अपनी संतानों को नमाज़ पढ़ने का आदेश दो, जब वे सात साल के हो जाएँ और उसके लिए उन्हें मारो, जब वे दस साल के हो जाएँ तथा उनका बिस्तर अलग-अलग कर दो।**"

चौथी शर्त : हदस यानी अपवित्रता को दूर करना है। ज्ञात हो कि इससे अभिप्राय वुज़ू करना है, जो एक सर्वविदित वस्तु है। यह भी मालूम रहे कि वुज़ू हदस के कारण ही अनिवार्य होता है।

वुज़ू की दस शर्तें हैं : इस्लाम, अक़्ल, होश संभालने की आयु, नीयत, तहारत (वुज़ू) संपूर्ण होने तक नीयत बरक़रार रखना, वुज़ू वाजिब (आवश्यक) करने वाली वस्तुओं का न पाया जाना, वुज़ू से पहले (यदि शौच में गया हो तो) जल से इस्सतिंजा करना अथवा पत्थर आदि के प्रोयग से सफाई करना, जल का पवित्र एवं वैध होना, शरीर में कोई ऐसी वस्तु न रहने देना जो जल को चमड़े तक पहुँचने से रोके, एवं ऐसे व्यक्ति के लिए नमाज़ का समय आ जाना, जो किसी बीमारी के कारण अपना वुज़ू बचाके न रख पाता हो।

रही बात वुज़ू के फ़र्ज़ यानी अनिवार्य कार्यों की, तो वे छह हैं : चेहरे को धोना, जिसके अंदर मुँह में पानी लेकर कुल्ली करना और नाक में पानी डालकर उसे साफ करना भी शामिल है। मालूम रहे कि चेहरे की सीमा लंबाई में सिर के बालों के उगने की जगहों से लेकर ठुड्डी तक और चौड़ाई में एक कान के किनारे से दूसरे कान के किनारे

तक है। जबकि वुज़ू के शेष अनिवार्य कार्य हैं : दोनों हाथों को कोहनियों तक धोना, पूरे सिर और दोनों कानों का मसह करना, दोनों पाँवों को टख़नों तक धोना तथा इन सब कार्यों को क्रमानुसार और लगातार करना। दलील अल्लाह तआला का यह कथन है : **﴿ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, तो अपने मुँह तथा कोहनियों सहित अपने हाथों को धो लिया करो और अपने सिर का मसह कर लो, तथा अपने पैर टख़नों सहित धो लो।﴾**

वुज़ू के उक्त अनिवार्य कार्यों को क्रमानुसार करने की दलील यह हदीस है : "तुम लोग भी उसी क्रम से शुरू करो, जिस क्रम से अल्लाह तआला ने शुरू किया है।"

जबकि इन फ़र्ज़ कार्यों को लगातार करने की अनिवार्यता की दलील, चमक वाले व्यक्ति की हदीस है, जिसमें आया है कि अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने एक आदमी के पैर में पानी न पहुँचने के कारण एक दिरहम के समान स्थान को चमकते हुए देखा, तो उसे दोबारा वुज़ू करने का आदेश दिया।

और वुज़ू के लिए बिस्मिल्लाह कहना भी वाजिब है, बशर्ते कि याद रहा हो।

वुज़ू को भंग करने वाली चीज़ें आठ हैं : दोनों रास्तों (गुप्तांगों) से निकलने वाली चीज़ें, शरीर से स्पष्ट रूप से निकलने वाली गंदी चीज़, बुद्धि का विनाश होना, औरत को काम-वासना के साथ छूना, आगे या पीछे के गुप्तांग को हाथ से छूना, ऊँट का माँस खाना, मुर्दे को स्नान देना और इस्लाम धर्म छोड़ देना, अल्लाह तआला इससे हमें सुरक्षित रखे।

पाँचवीं शर्त : तीन चीज़ों से गंदगी को दूर करना है : शरीर, कपड़े और उस जगह से जहाँ नमाज़ पढ़नी है। इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾और अपने कपड़ों को पाक-साफ कर ले﴿

छठी शर्त : पर्दा करना : विद्वानों का इस बात पर मतैक्य है कि जो भी व्यक्ति क्षमता रखने के बावजूद निर्वस्त्र होकर नमाज़ पढ़ेगा, उसकी नमाज़ नहीं होगी। पुरुष और लौंडी का पर्दा, नाभि से लेकर

घुटनों तक है, जबकि आज़ाद औरत का पर्दा, चेहरे को छोड़कर उसका पूरा शरीर है। इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह कथन है : **﴿ऐ आदम की संतानो! प्रत्येक मस्जिद के पास अपनी शोभा धारण कर लो।﴾** अर्थात : हर नमाज़ के समय।

सातवीं शर्त : नमाज़ का समय होना : सुन्नत से इसकी दलील, जिब्रील -अलैहिस्सलाम- वाली हदीस है, जिसमें आया है कि उन्होंने अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को पहले और आखिरी वक्त में नमाज़ पढ़ाई और कहा : **"ऐ मुहम्मद! नमाज़ इन्हीं दो वक्तों के बीच में पढ़नी है।"**

अल्लाह तआला का यह फरमान भी इसकी दलील है : **﴿बेशक नमाज़, ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।﴾** अर्थात : निर्धारित समय-सीमा पर अनिवार्य की गई है और हर नमाज़ के अलग-अलग निर्धारित समय की दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है : **﴿आप नमाज़ की स्थापना करें, सूर्यास्त से रात के**

अंधेरे तक तथा प्रातः (फ़ज्र के समय) क़ुरआन पढ़िए। वास्तव में, प्रातः क़ुरआन पढ़ना, उपस्थिति का समय है।﴾

आठवीं शर्त : क़िबले की तरफ मुँह करना : इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह फरमान है : **﴿हम आकाश की ओर तुम्हारा बार-बार मुँह फेरना देख रहे हैं , इसलिए हम तुम्हें उस क़िब्ले की ओर हमेशा के लिए फेर देना चाहते हैं जो तुम्हें पसंद है। तो अब तुम मस्जिद-ए-हराम की तरफ अपना मुँह कर लो और तुम सब लोग जहाँ कहीं भी रहो, उसी की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ा करो।﴾**

नौवीं शर्त : नीयत : याद रहे कि नीयत का स्थान दिल है और उसके लिए मनगढ़ंत शब्दों का उच्चारण, बिदअत है। इसकी दलील यह हदीस है : "सभी कर्मों का आधार नीयतों पर है, और हर व्यक्ति के लिए वही कुछ है जिसकी उसने नीयत की है।"

नमाज़ के स्तंभ चौदह हैं : क्षमता होने पर खड़ा होना, तकबीर-ए-तहरीमा (नमाज़ की प्रथम तकबीर) कहना, सूरत फ़ातिहा पढ़ना, रुकू करना, रुकू के पश्चात सीधे खड़ा होना, सात अंगों पर सजदा

करना, सजदे से उठना, दोनों सजदों के बीच बैठना, उपर्युक्त समस्त कर्मों को इतमीनान से करना, अरकान (स्तंभों) को क्रमवार अदा करना, आख़िरी तशह्हुद तथा उसके लिए बैठना, अल्लाह के नबी - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर दुरूद भेजना एवं दोनों सलाम।

पहला स्तंभ : सक्षम होने पर खड़ा होना है और इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह फरमान है : **﴿नमाज़ों का, विशेष रूप से बीच वाली नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो तथा अल्लाह के लिए सविनय खड़े रहो﴾**

दूसरा स्तंभ : तकबीर-ए-तहरीमा यानी नमाज़ आरंभ करने के लिए कही जाने वाली तकबीर है और इसकी दलील यह हदीस है : "इसकी तहरीम तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहना है और तहलील सलाम फेरना है।" इसके बाद, दुआ-ए-इस्तिफ़ताह पढ़नी है, जो कि सुन्नत है। इसके शब्द हैं : « سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلاَ إِلَهَ غَيْرك» अर्थात : ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी महिमा उच्च है और तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। "سبحانك اللهم" : यानी ऐ अल्लाह! मैं तेरी ऐसी

पवित्रता बयान करता हूँ, जो तेरी महिमा के योग्य है। "وبحمدك" : यानी तेरी प्रशंसा करता हूँ। "وتبارك اسمك" : यानी तुझे याद करने से बरकत हासिल होती है। "وتعالى جدك" : यानी तेरी शान और महिमा बहुत ऊँची है। "ولا إله غيرك" : ऐ अल्लाह! धरती और आकाश में, तेरे सिवा कोई भी सत्य पूज्य नहीं है।

उसके बाद कहेगा : "أَعُوذُ بِالله مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ" यानी मैं बहिष्कृत शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।" "أَعُوذُ" : का अर्थ है : मैं पनाह माँगता हूँ, मैं शर्णागत होता हूँ, और ऐ अल्लाह! मैं तेरे संरक्षण में आता हूँ उस शैतान के मुक़ाबले में, जो "الرَّجِيمِ": यानी धुतकारा हुआ और अल्लाह की रहमत से दूर किया हुआ है, इस बात से कि वह मुझे मेरे धर्म के मामले में हानि पहुँचा सके और न ही मेरी दुनिया के मामले में।

और सूरत फ़ातिहा को नमाज़ की हर रकअत में पढ़ना नमाज़ का एक स्तंभ है, जैसा कि इस हदीस में है : "जो सूरत फ़ातिहा नहीं पढ़ेगा, उसकी नमाज़ ही नहीं होगी।" सूरत फ़ातिहा उम्मुल क़ुरआन, अर्थात क़ुरआन की माँ है।

फिर ﴿बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम﴾ पढ़े, जो कि बरकत और मदद हासिल करने का साधन है।

﴿الحَمْدُ لله﴾ अल-हम्दु का अर्थ है : प्रशंसा और स्तुति। उसपर जो अलिफ़ और लाम है, वह हर प्रकार की और सारी प्रशंसाओं को समेटने के लिए है। वैसे तो मद्ह के मायने भी प्रशंसा के हैं, मगर ध्यान में रखने की बात यह है कि सुंदरता आदि ऐसे गुण, जिनपर आदमी का अपना कोई अमल-दख़ल न हो, उनके आधार पर होने वाली प्रशंसा को मद्ह कहते हैं, हम्द नहीं।

﴿رَبِّ العَالَمِينَ﴾ रब का अर्थ है : सत्य पूज्य, रचयिता, आजीविका प्रदान करने वाला, स्वामी, संचालक और सभी सृष्टियों का नेमतों के द्वारा प्रतिपालन करने वाला।

﴿العَالَمِينَ﴾ अल्लाह के अतिरिक्त जो कुछ भी है, वह आलम (दुनिया) है और अल्लाह तआला ही सबका पालनहार है।

﴿الرَّحْمَنِ﴾ शब्द में रहमत (करूणा) का जो अर्थ पाया जाता है, वह संपूर्ण सृष्टियों के लिए व्याप्त है।

﴿الرَّحِيمِ﴾ शब्द में करूणा का जो अर्थ पाया जाता है, वह केवल मोमिनों के साथ खास है। इसकी दलील, अल्लाह तआला की यह फरमान है : ﴿وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا﴾ अर्थात अल्लाह तआला मोमिनों पर अति करूणामयी है।

﴿مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ﴾ में يَوْمِ الدِّينِ का अर्थ प्रतिफल और हिसाब-किताब का दिन है, जिस दिन हर शख्स को उसके कर्मों का प्रतिफल दिया जाएगा। अगर अच्छा कर्म किया होगा तो अच्छा और अगर बुरा कर्म किया होगा तो बुरा प्रतिफल दिया जाएगा। इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह कथन है : ﴿और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है? फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है? जिस दिन किसी का किसी के लिए कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सारे अधिकार अल्लाह के हाथ में होंगे।﴾ अल्लाह के रसूल की यह हदीस भी इसकी दलील है : "बुद्धिमान वह है, जो खुद अपनी समीक्षा करे और मौत के बाद वाले जीवन की तैयारी करे तथा बुद्धिहीन वह है, जो खुद को आकांक्षाओं के पीछे लगाए रखे और अल्लाह से बड़ी-बड़ी उम्मीदें बाँधे।"

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ﴾ अर्थात : हम तेरे सिवा किसी की इबादत नहीं करते। यह एक प्रतिज्ञा है बंदे और उसके रब के बीच कि वह उसके सिवा किसी की इबादत कदापि नहीं करेगा।

﴿وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ यह भी बंदा और उसके रब के बीच एक प्रतिज्ञा है कि बंदा, अल्लाह के सिवा किसी से भी मदद का प्रार्थी नहीं होगा।

﴿اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ﴾ में ﴿اهْدِنَا﴾ का अर्थ है : हमें रास्ता दिखा, हमारा मार्गदर्शन कर और हमें उसपर अटल रख । ﴿الصِّرَاط﴾से मुराद इस्लाम धर्म है। जबकि कुछ लोगों के अनुसार इससे अभिप्राय रसूल हैं और कुछ लोगों के अनुसार क़ुरआन मुराद है। वैसे सारे ही अर्थ सही हैं। ﴿الْمُسْتَقِيم﴾ के मायने उस रास्ते के हैं, जिसमें ज़रा भी टेढ़ापन ना हो।

﴿صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ﴾ में सिरात से मुराद उन लोगों का रास्ता है जिनपर अल्लाह तआला का उपकार हुआ है। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿तथा जो अल्लाह और

रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे, वही (स्वर्ग में) उनके साथ होंगे, जिनपर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात नबियों, सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ और वे निःसंदेह सबसे अच्छे साथी हैं।﴾

﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ﴾ में 'मग़ज़ूब' से मुराद यहूदी हैं जिन्होंने ज्ञान रखने के बावजूद उसपर अमल नहीं किया । आप अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि वह आपको उनके रास्ते पर चलने से बचाए।

﴿وَلاَ الضَّالِّينَ﴾'ज़ाल्लीन' से मुराद ईसाई हैं, जो अल्लाह की इबादत तो करते हैं मगर अज्ञानता एवं पथभ्रष्ठता के साथ । आप अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह आपको उनके रास्ते पर चलने से बचाए। 'ज़ाल्लीन' की दलील अल्लाह तआला का यह कथन है : “आप उनसे कहिए कि क्या हम तुम्हें कर्मों के लिहाज़ से सबसे ज्यादा घाटा उठाने वालों के बारे में बता दें? ये वह हैं, जिनके सांसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गए, परन्तु वे समझते रहे

कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।" तथा अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की यह हदीस भी इसकी दलील है : «तुम लोग अपने से पहले के समुदायों के रास्तों पर बिल्कुल वैसे ही चलोगे, जैसे तीर का एक पर दूसरे पर के बराबर होता है। यहाँ तक कि अगर वे सांडे के बिल में घुसे थे, तो तुम भी उसमें घुसोगे। सहाबा ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आपका आशय यहूदी तथा ईसाई हैं? तो आपने फरमाया : उनके अलावा और कौन।» इस हदीस को बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा दूसरी हदीस में है : «यहूदी 71 संप्रदायों में विभाजित हो गए और ईसाई 72 संप्रदायों में, लेकिन यह उम्मत 73 संप्रदायों में विभाजित हो जाएगी। एक को छोड़ कर सभी संप्रदाय जहन्नम में जाएँगे। इसपर सहाबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! वह एक संप्रदाय कौन है? आपने फरमाया : जो उस तरीके पर कायम रहेगा, जिसपर मैं और मेरे सहाबा हैं।»

उसके बाद के स्तंभ हैं : रुकू, उससे उठना, सात अंगों पर सजदा करना, उसको सही ढंग से करना और दो सजदों के बीच

बैठना। इनकी दलील, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾ऐ वे लोगो, जो ईमान लाए हो! रुकू और सजदा करो।﴿ और अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की यह हदीस भी : "मुझे सात हड्डियों पर सजदा करने का आदेश दिया गया है।" तथा इतमीनान के साथ नमाज़ के सभी कार्यों को अदा करना और सभी स्तंभों को क्रमवार अदा करना। इसकी दलील, अबू हुरैरा से वर्णित वह हदीस है, जिसमें एक ऐसे व्यक्ति की बात है, जो अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ रहा था। अबू हुरैरा -रज़ियल्लाहु अनहु- बयान करते हैं : हम अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के पास बैठे हुए थे कि उसी दौरान एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़ी। [फिर उठा] और आकर अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को सलाम किया, तो आपने फ़रमाया : "जाओ और दोबारा नमाज़ पढ़ो, क्योंकि तुमने नमाज़ पढ़ी ही नहीं।" उसने ऐसा तीन बार किया और फिर कहने लगा कि क़सम है उस हस्ती की, जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है, इससे अधिक अच्छी तरह से मुझे नमाज़ पढ़ना नहीं आता, इसलिए आप ही मुझे

सिखा दें। इसपर, अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया : "जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहो और क़ुरआन में से जो कुछ तुम्हें याद हो पढ़ो। फिर रुकू करो, यहाँ तक कि स्थिर हो जाओ, फिर रुकू से उठकर इतनी देर खड़े रहो कि सामान्य अवस्था में आ जाओ, फिर सजदा करो और इतनी देर सजदे में रहो कि स्थिर हो जाओ, फिर सजदे से उठकर इतनी देर बैठो कि स्थिर हो जाओ, फिर ऐसा ही अपनी पूरी नमाज़ में करो।" अंतिम तशह्हुद भी, नमाज़ का एक फ़र्ज़ स्तंभ है, जैसा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद -रज़ियल्लाहु अन्हु - से वर्णित हदीस में आया है, वह कहते हैं कि तशह्हुद पढ़ना फ़र्ज़ होने से पहले हम लोग यह दुआ पढ़ते थे :

"السَّلاَمُ عَلَى اللهِ مِنْ عِبَادِهِ، السَّلاَمُ عَلَى جِبْرِيلَ، وَمِيكَائِيلَ"

(अल्लाह तआला पर उसके बंदों की तरफ से सलाम हो, जिब्रील और मीकाईल पर सलाम हो।) इसपर अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "तुम लोग ऐसा मत कहो कि अल्लाह तआला पर उसके बंदों की तरफ से सलाम हो,

क्योंकि अल्लाह तआला स्वयं अस्-सलाम, अर्थात शांति देने वाला है, बल्कि उसकी जगह पर यह दुआ पढ़ा करो :

"التَّحِيَّاتُ لله وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِبَاتُ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ الله وَبَرَكَاتُهُ، السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ الله الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَن لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ ورَسُولُهُ"

अर्थात : हर प्रकार का आदर-सत्कार, समस्त दुआएँ और सब पवित्र बातें अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आपपर शांति हो और आपपर अल्लाह की तरफ से रहमतें और बरकतें अवतरित हों। हमपर और अल्लाह के नेक बंदों पर भी, शांति की धारा बरसे। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद, अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। "التَّحِيَّات" : यानी अल्लाह हर प्रकार के सम्मान का स्वामी और अधिकारी है। जैसे उसके सामने झुकना, रुकू करना, उसे सजदा करना, यह मानना कि बस वही अनश्वर है, हमेशगी बस उसी को हासिल है और वह सभी आदर और सम्मान जो तमाम जहानों के पालनहार के लिए हो सकते हैं, वह सब अल्लाह के लिए हैं। जो भी उनमें से कोई भी सम्मान और आदर, अल्लाह के सिवा किसी और को देगा, वह मुश्रिक

(बहुदेववादी) और काफ़िर समझा जाएगा। "وَالصَّلَوَاتُ" : यानी सारी-सारी दुआएँ। कुछ लोगों के अनुसार इससे मुराद पाँच नमाज़ें हैं। "وَالطَّيِّبَاتُ لله" : अल्लाह पाक है और उसी कथन और कर्म को ग्रहण करता है, जो पाक हो। "السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيّ وَرَحْمَةُ الله وَبَرَكَاتُهُ" : इन शब्दों के द्वारा, आप अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के लिए शांति, रहमत और बरकत की दुआ करते हैं, और जिसके लिए दुआ की जाए, उसे अल्लाह के साथ पुकारा नहीं जाता।

" السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين "

इन शब्दों के द्वारा आप अपने लिए और आकाश एवं धरती के हर नेक बंदे के लिए सुरक्षा एवं शांति की प्रार्थना और कामना करते हैं। सलाम एक दुआ है और नेक बंदों के लिए दुआ की जाती है, अल्लाह के साथ उनको भी पुकारा नहीं जाता।

" أشهد أن لا اله الا الله وحده لا شريك له"

: इन शब्दों के ज़रिए आप पुख़्ता और यक़ीनी गवाही देते हैं कि धरती और आकाश में पूजे जाने का हक़दार अल्लाह के सिवा कोई भी नहीं है। इस बात की गवाही देने ही से कि मुहम्मद, अल्लाह

के रसूल हैं, स्पष्ट हो जाता है कि वे एक बंदे हैं और बंदे को पूजा नहीं जाता और रसूल को झुठलाया नहीं जाता, बल्कि उनकी आज्ञा का पालन और उनका अनुसरण किया जाता है, अल्लाह तआला ने उन्हें बंदा होने के सम्मान से सम्मानित किया है। इसकी दलील, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿अत्यन्त शुभ है वह अल्लाह जिसने अपने उपासक पर फुरक़ान (क़ुरआन) अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिए सतर्क करने वाला बन जाए।﴾

"اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، [وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ]، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ [وعلى آل إبراهيم] إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ "

(ऐ अल्लाह! मुहम्मद और उनके परिवारजनों की प्रशंसा कर, जैसा कि तूने इबराहीम और उनके परिवारजनों की प्रशंसा की है। निःसंदेह, तू प्रशंसा को पसंद करने वाला, सर्वसम्मानित है।) "الصَّلاَةُ" : यह शब्द जब अल्लाह तआला की तरफ से बोला जाए, तो इसका अर्थ होता है : “मला-ए-आ'ला” में (च्चतम कोटि के फ़रिश्तों के सामने), अपने बंदे की प्रशंसा करना, जैसा कि इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में अबुल आलिया के हवाले से नकल किया

है कि उन्होंने कहा : अल्लाह की तरफ से सलात का अर्थ है "मला-ए-आ'ला" में (उच्चतम कोटि के फ़रिश्तों के सामने) अपने बंदे की प्रशंसा करना। वैसे, इस शब्द का अर्थ रहमत भी बताया गया है, लेकिन पहला अर्थ ही सही है। यह शब्द जब फ़रिश्तों की तरफ से बोला जाए, तो उसका अर्थ क्षमायाचना और जब मानव की तरफ से बोला जाए, तो उसका अर्थ दुआ होगा। "وَبَارِكْ" : यह और इसके बाद के भाग कथनी और करनी की सुन्नतें हैं।

नमाज़ की वाजिबात (अनिवार्य कार्य) आठ हैं : तकबीर-ए-तहरीमा (पहली बार अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करना) के सिवा सारी तकबीरें, रुकू में سبحان ربي العظيم कहना, इमाम तथा अकेले नमाज़ पढ़ने वाले का سمع الله لمن حمده कहना, तथा सभी का ربنا ولك الحمد कहना, रुकू में سبحان ربي العظيم कहना, सजदे में سبحان ربي الأعلى कहना, दोनें सजदों के बीच رب اغفر لي कहना, प्रथम तशह्हुद पढ़ना और उसके लिए बैठना।

याद रहे कि अरकान (स्तंभों) में से कोई अगर, भूले से या जानते-बूझते छूट जाए तो नमाज़ व्यर्थ हो जाएगी, और अगर

अनिवार्य कार्यों (वाजिबात) में से किसी को जान बूझकर छोड़ दिया जाए तो नमाज़, व्यर्थ हो जाएगी और अगर भूले से छूट जाए तो सजदा सह्व अर्थात भूल जाने का सजदा करना होगा। और अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है। [अल्लाह की असीम कृपा एवं शांति हो हमारे संदेष्टा मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, आपके परिजनों और साथियों पर।]

विषय सूची

शोधकर्ता की प्रस्तावना 3
नमाज़ की शर्तें नौ (9) हैं : 10
विषय सूची.. 31